हनुमान पूजा विधि | Hanuman ji ki Puja kaise karen

हनुमान जी की पूजा शाम के समय करें तो बहुत ही अच्छा हैं। कियोकि दिन के समय श्री रामचंद्र जी की सेबा मैं ब्यस्त होते हैं हनुमान जी। और अगर आप दिन में करना चाहते हैं तो प्रातकाल सूर्य उठने से पहले हनुमान जी की पूजा करें। तो चलिए जानते हैं श्री हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए हनुमान पूजा विधि।

1: शाम के समय स्नान करके लाल वस्त्र का धारण करें । और अगर स्नान नहीं करना चाहते हैं तो हाथ, पैर, मुँह बहुत अच्छे तरह से धो कर शुद्ध लाल बस्त्र धारण करें।

2: अब पुर्ब कोण मे लाल रंग का आसन लगाकर या चौकी पर लाल रंग का आसन बिछाकर हनुमान जी की एक मूर्ति या चित्र स्थापित कर ले।

3: और जब भी हनुमान जी का पूजन करें तब श्री रामचंद्र जी की भी पूजन करें। इसीलिए श्री रामचंद्र जी की भी एक चित्र रखें आसन में।

4: गंगा जल की छींटे से आसन शुद्ध करें।

5: शुद्ध घी या तेल का दीपक जला देना है हनुमान जी के सामने।

6: बस्त्र स्वरुप जनेऊ समर्पित करें।

7: ऑरेंज रंग का जो सिंदूर हैं उससे रामचंद्र जी और हनुमान जी को अनामिका अंगुली से तिलक लगाए।

8: पुरुष हनुमान जी की मूर्ति को चोला चढ़ाये ऑरेंज रंग का सिंदूर में चमेली का तेल मिलकर। और महिलाएं हनुमान जी की चरण में सिंदूर अर्पित करें।

9: लाल फूल हनुमान जी बहुत प्रिय है। तो हनुमान जी को लाल फूल अर्पित करें।

10: धूप अर्पित करें हनुमान जी के सामने।

11: एक लौटा जल अर्पित करें।

12: हनुमान जी के सामने भोग अर्पित करें। केला, बूंदी का लड्डू, भीगे चने, गूढ़ हनुमान जी को बहुत ही पसंद है। इसीलिए हनुमान जी को यह भोग चढ़ाये।

13: रुई में चमेली का तेल बजरंगबली के सामने रखे। या हल्के से चमेली का तेल की छिटे दे सकते हैं हनुमान जी की मूर्ति पर।

14: उसके बाद आप हनुमान चालीसा का पाठ करें। हनुमान चालीसा का पाठ करने से हनुमान जी बहुत ही जल्द प्रसन्न हो जाते हैं। मंगलवार के दिन सुबह या शाम आप सुंदरकांड का पाठ करें तो बहुत ही शुभ फल प्राप्त होता है।

15: इसी तरह से आप की हनुमान पूजा विधि पूर्ण हुए। पूजा के बाद आप आरती करें ।

16: अब हाथ जोर कर हनुमान जी को आपकी मनोकामना पूर्ण करने के लिए प्रार्थना करें। और आपके द्वारा पूजा किये गए भूल के लिए हनुमान जी के सामने यह मंत्र का जाप करते हुए क्षमा प्रार्थना करें।

मंत्रः
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन। यत्पूजितं मया देव! परिपूर्ण तदस्तु मे॥

17: सबको प्रसाद वितरण करें और खुद भी प्रसाद सेबन करें।